Trbue Chandigarh

STEP UP: SMINU JINDAL

Svayam and Yuvsatta come together to for an International Youth Peace Fest

A new beginning

Svayam (National Centre for Inclusive Environment and an initiative of Sminu Jindal Charitable Trust) in partnership with Yuvsatta — a Chandigarh based NGO conducted a workshop for over 300 students as part of The 9th International Youth Peace Fest (IYPF 2014). The fest was inaugurated by Sminu Jindal, MD, Jindal Saw Limited and Founder Svayam. Sminu Jindal was also conferred with the 'Global Youth ICON Award' for her work in promoting rights and dignity of the disabled and elderly.

On the occasion, she said "In our endeavour to make not just Incredible India but also Accessible India, Svayam and we are reaching out to all, be it the policy makers, civic agencies or other stake holders. Today we come to invite the youth of 46 nations who are congregated here in Chandigarh for the 9th youth peace festival hosted by Yuvsatta to become our partners and cause ambassadors."

"We hope that these young ambassadors will carry back the message of an equitable society to their respective countries and hopefully sensitise those involved in developing the public infrastructure to build infrastructure is accessible and barrier free," she added.

The session titled, 'Creating more disabled-friendly cities' focussed on creating awareness about what constitutes liveable cities and the trends (global and Indian) that are contributing to pressure on the cities.

The IYPF 2014 is scheduled from September 27 to October 2, 2014. The event will largely focus on spreading the message of peace and inclusiveness. — TNS

भगवान ने विकलांगों की मदद की शक्ति दी: स्मिनू

चंडीगढ़। भगवान ने मुझे व्हीलचेयर पर बिठाया, लेकिन शक्ति भी दी कि मैं विकलांग लोगों की मदद कर सकूं। यह कहना है गैर सरकारी संगठन स्वयम (नेशनल सेंटर फॉर इनक्ल्यूसिव एन्वॉयरमेंट एंड इनिशिएटिव ऑफ स्मिनु जिंदल चैरिटेबल ट्रस्ट) की फाउंडर एवं चेयरपर्सन स्मिनु जिंदल का। स्मिनु ने यह शब्द शनिवार को होटल ताज में कहे। स्मिनु चंडीगढ़ में एनजीओ युवासत्ता द्वारा आयोजित 9वें इंटरनेशनल यूथ पीस फेस्टिवल में शिरकत करने यहां पहुचीं। इस फेस्टिवल में स्मिनू करीब 300 विद्यार्थियों से मुलाकात की। स्मिनू को विकलांगों और बुजुर्गों के अधिकारों और गरिमा को बढ़ाने के लिए ग्लोबल यूथ आइकॉन से भी सम्मानित किया गया।

DAINIK Bhaskar

पक्का विश्वास है स्वयं पर

जिंदल सॉ मिल्स की एमडी स्मिनु जिंदल चंडीगढ़ पहुंची अपनी संस्था और उसके मकसद पर बात करने

WOMAN POWER

सिटी रिपोर्टर ▸ चंडीगढ़

जयपुर से दिल्ली आते हुए उनकी कार का एक्सीडेंट हुआ और सारे सपने हवा में बिखर गए। एक ग्यारह साल की बच्ची जो कथक करती थी, सपने बुनती थी अचानक खुद को ऐसी हालत में पाती है जहां वो कमर से नीचे के हिस्से को मूव नहीं कर सकती। ये बच्ची थी स्मिनु जिंदल। तीस साल पहले हुए इस एक्सीडेंट के हालात पर उन्होंने बहुत देर तक आंसू नहीं बहाए। उन्होंने तय किया उसी हालत में खुद को इतना बुलंद करेंगी कि लोग रश्क करेंगे। स्मिनु ने अपनी हिम्मत के बल पर पढ़ाई पूरी की और परिवार का बिजनेस जॉइन किया। आज वे सफल बिजनेस वुमन हैं। मां हैं और समाज के लिए अपनी जिम्मेदारी निभाने को तत्पर इंसान भी।

नेशनल सेंटर फॉर इंक्लूसिव एन्वायर्नमेंट एंड इनीशिएटिव ऑफ स्मिनु जिंदल चेरिटेबल ट्रस्ट यानी स्वयं नाम की संस्था बनाकर वे उन लोगों की जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए काम कर रही हैं जो किसी भी कारण से शारीरिक विकलांग हैं। शनिवार को चंडीगढ़ पहुंची युवसत्ता के सहयोग से आयोजित एक वर्कशॉप में शिरकत करने के लिए। स्मिनु का कहना है हम ये नहीं कहते कि विकलांगों के लिए एक अलग दुनिया बना दी जाए बल्कि हमारा मकसद है उन्हें दुनिया के साथ मुख्यधारा में मिलकर चलने का मौका देना। उन्होंने 46 देशों के बच्चों को इस वर्कशॉप में संबोधित किया।

डिसेबल्ड फ्रेंडली सिटी

स्मिनु का कहना है कि हमें अपने शहरों को डिसेबल्ड फ्रेंडली बनाने पर जोर देना होगा। ताकि ये लोग घरों से बाहर निकल कर अपने काम खुद कर सकें जो विकलांगता के कारण दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं। स्मिनु खुद जिंदल सॉ मिल्स की एमडी हैं और दुनिया भर में ट्रैवल करती हैं। उनका कहना है-भारत में अभी भी मकान, इमारतें और दफ्तर या अस्पताल तक बनाते हुए इस बात का ध्यान नहीं रखते कि वहां आने-जाने वालों में डिसेबल लोग, बजुर्ग, गर्भवती महिलाएं और बच्चे भी हैं। इन सब लोगों को रैम्प और अन्य ऐसी सुविधाओं की जरूरत होती है जो उनका आना-जाना आसान कर सके। स्वयं के जरिए हम ऐसा ही वातावरण तैयार करने की कोशिश कर रहे हैं।